धूतपापेश्वर

आरोग्यमंदिर
पत्रिका
अप्रैल २०१७
AROGYAMANDIR PATRIKA

अष्ठीला विकार विशेषांक

संपादकीय

विकार असंख्य हैं। यदि इन विकारों का वर्गीकरण करने के बारे में सोचो तो विविध प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है। प्रायः इसी पद्धति से स्त्री रोगों का अलग वर्गीकरण किया जाता है। लेकिन पुरुष विशिष्ट रोग इस तरह की चर्चा या विचार होते नहीं दिखाई देता।

शायद वह इसलिए हो कि 'स्त्री रोग' आयुर्वेद शास्त्र में स्पष्ट रुप से अलग विभाग में वर्णित किए हैं, जब कि पुरुषों के विकारों का अलगसा जिक्र कही भी नहीं दिखता। किंतु ग्रंथों का अभ्यास करने पर केवल पुरुषों में दिखाई देनेवाले तथा उनके जीवन में बाधा पहुँचानेवाले विकारों का भी उल्लेख मिलता है। लेकिन चरकाचार्यजीने चरक संहिता में 'अष्ठीला' नामक विकृति का किया हुआ उल्लेख स्पष्ट दर्शाता है, कि जिस तरह स्त्री विशिष्ट विकार होते हैं, वैसेही पुरुष विशिष्ट होते हैं और उनकी भी चिकित्सा करना अत्यावश्यक होता ही है, जिसमें से एक सबसे अधिक मात्रा में दिखनेवाला विकार है 'अष्ठीला'। यद्यपि पुरुष शरीर में उपस्थित अष्ठीला ग्रंथि अपने आप में विकार नहीं कही जा सकती, लेकिन जब उसका आयाम बढ जाता है, या उसे सूजन आ जाती है या उसमें अनावश्यक काठिण्य आता है, तब उसे अष्ठीला विकार कहना पडता है, क्योंकि **विविधं दुःखं आदधाति इति व्याधि** इसका उहापोह करते समय **कायवाङ्‌ मानसी पीडा** के साथ साथ **पुरुषस्य दुःखाय संयोगो येषां ते दुःख संयोग व्याधय उच्यते** इसमें पुरुष का अर्थ षड् धात्वात्मक पुरुष है। इन शब्दों में चरकाचार्यजी एवं सुश्रुताचार्यजीने उहापोह किया मिलता है।

आपकी प्रतिक्रियाओं द्वारा सूचित इसी विषय का चयन कर आप अर्थात् श्री धूतपापेश्वर साहित्य के वाचकों के सन्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। हमें खुशी होगी अगर इस विषय को पढने के पश्चात् आपके विचार एवं अनुभवाधारित चिकित्सासंबंधी जानकारी जरुर भेजें। साथ ही साथ यह आरोग्य मंदिर अष्ठीला विकार का अंक आपको कैसा लगा तथा आनेवाले समय में किन विषयों की चर्चा हो इसके बारे में आपके विचार जरुर भेजें। आपसे मार्गदर्शन की अपेक्षा में !

आपका विनीत,

वैद्य शैलेश नाडकर्णी

विषय प्रवेश

हालांकि, सभी मनुष्य सप्तधातुओं से बनने के बावजूद भी स्त्री एवं पुरुष जीवन में विभिन्न अवस्थाओं से गुजरने के कारण उन दोनों में कुछ अवयव विभिन्न होते हैं। इसलिए स्वाभाविक रुप से विभिन्न अवयवों से संबंधित समस्याएँ भी स्त्री एवं पुरुषों में विभिन्न होती हैं। और इसी कारण स्त्री एवं पुरुष इन दोनों में दोष, धातु एवं मल यह मूलभूत घटक एकसमान होने के बावजूद भी स्त्री एवं पुरुषों में यौवन काल में व्यक्त होनेवाले अवयवों में निश्चित रुप से भेद दिखाई देता है। स्वाभाविक रुप से उन दोनों में उत्पन्न होनेवाली समस्याएँ भी अलग अलग हो सकती हैं - उदा. स्त्रियों में आर्तववह स्रोतस् संबंधित जब कि पुरुषों में शुक्रवह स्रोतस् संबंधित समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

इसीका एक उदाहरण है, अष्ठीला ग्रंथि संबंधित तकलीफ जो केवल पुरुषों का विशेष लक्षण है जब कि वह कभी भी स्त्रियों में उत्पन्न नहीं हो सकती है। हम इस विशेष ग्रंथि के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे जिसमें पुरुषों में ही विकार उत्पन्न करने की क्षमता है।

इस एप्रिल २०१७ के आरोग्य मंदिर पत्रिका में हम केवल पुरुषों में दिखाई देनेवाली इस अनोखी ग्रंथि एव संबंधित विकारों के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

परिचय

अष्ठीला व्याधि का वर्णन विस्तार से नहीं मिलता है। चरक एवं सुश्रुत जैसे ग्रंथों में अष्ठीला व्याधि का वर्णन संक्षिप्त में मिलता है। किसी भी प्रकार की व्याधि का नामकरण निम्न सूत्र को ध्यान में रखकर किया जाता है -

त एवापरिसङ्‌ख्येया भिद्यमाना भवन्ति हि।
रुजावर्णसमुत्थानस्थानसंस्थाननामभिः।।
च.सू. १८/४२

रुजा (शूल), वर्ण (पाण्डु, हरिद्रा आदि), समुत्थान (निदान), स्थान (आमाशय, पार्श्व आदि), संस्थान (आकृति या स्वरुप उदा. गुल्म, अर्बुदादि - तुण्डिकेरी, शालूक, मसूरिका, अष्ठीला आदि) के अनुसार व्याधियों का नामकरण किया जाता है। इन सभी के अनुसार एवं नाम के अनुसार व्याधियाँ अनगिनत हो जाती हैं।

इसी सूत्र को ध्यान में रखते हुए पत्थर के समान घन, कठिन एवं ग्रंथिवत् होने से 'अष्ठीला' यह नामकरण किया जाता है। जिसका वर्णन ग्रंथों में विभिन्न सूत्रोंद्वारा किया हुआ मिलता है।

अष्ठीला -

अष्ठीला का वर्णन विभिन्न ग्रंथों में निम्नप्रकार से किया गया है।

जैसे सुश्रुत संहिता में,

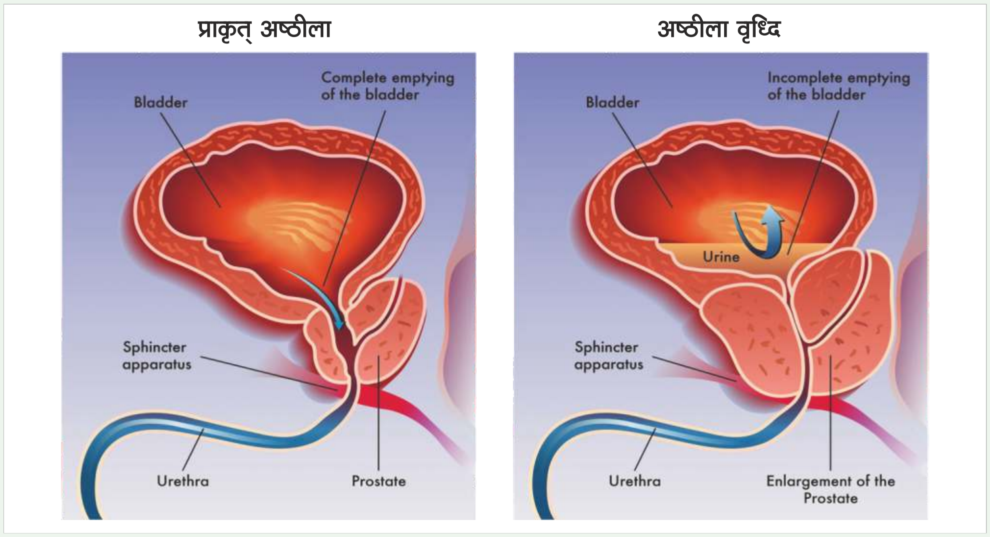

अष्ठीलाश्मेति अष्ठीला दीर्घवर्तुलपाषाणः अन्ये लौहकराणां लौही दीर्घवर्तुलभाण्डिकामाहुः तया तुल्योऽश्मा अष्ठीलाश्मा, सा चाष्ठीलाश्मा प्रसिद्धः। ड.सु.सू. ७/१५

शिलाप्रवंग (मौक्तिकयुक्त)

- अष्ठीला में उपयुक्त
- दाहशामक कार्य से मूत्रदाह कम करे
- मूत्रल कार्य से मूत्रकृच्छ्र में लाभदायक
- शुक्रक्षय एवं शीघ्र वीर्यपतन में उपयुक्त

अष्ठीला अर्थात् पत्थर। दीर्घ, वर्तुलाकार पत्थर को अष्ठीला कहते हैं। लोहार के पास पाए जानेवाले दीर्घ, वर्तुलाकार लोहे के गोलक को भी 'अष्ठीला' कहा जाता है। आकृति में उसी के समान शरीर में पत्थर सदृश्य पाए जानेवाली ग्रंथि को अष्ठीला या अष्ठीलाश्मा कहते हैं। उपरोक्त वर्णित सूत्र के अनुसार अष्ठीला यह शरीर में पाए जानेवाली पत्थर के समान घन, कठिन ग्रंथि है।

सुश्रुत निदानस्थान अध्याय १ के ९० वें सूत्र की टीका में डल्हणाचार्यजीने निम्नलिखित सूत्र का वर्णन किया है -

उत्तरापथे दीर्घवर्तुलपाषाणविशेष इत्येके, चर्मकाराणां वर्तुलदीर्घा लौही भाण्डिरित्यपरे घनः संहतावयवः। आयतो दीर्घः। बहिर्मार्गावरोधिनीम्, बहिर्मार्गाणि वातविण्मूत्राणि। ड.सु.नि. १/९०

उपरोक्त वर्णित सूत्र के अनुसार उत्तर प्रान्त में पाए जानेवाला दीर्घ एवं वर्तुलाकार पत्थर 'अष्ठीला' नाम से प्रसिद्ध है। चर्मकार तथा लोहार के पास पाए जानेवाले दीर्घ, वर्तुलाकार लोहे के गोलक को भी अष्ठीला कहा जाता है। उसी के समान शरीर में बहिर्मार्ग (पुरुष मूत्र मार्ग) में पाए जानेवाली तथा बहिर्मार्ग, अपान वायु, मल एवं मूत्र का अवरोध करनेवाली घन एवं संहत रचना को अष्ठीला कहा जाता है। यह रचना दीर्घ अर्थात् आयताकृति है।

चरकसंहिता में अष्ठीला के बारे में निम्नप्रकार से वर्णन किया हुआ मिलता है -

तस्य प्लीहा कठिनोऽष्ठीलेवादौ। च.चि. १३/३७

प्लीहा जब बढ जाती है, तब वह अष्ठीला अर्थात् पत्थर के जैसी ग्रन्थिस्वरुप एवं स्पर्श में कठोर दिखाई देती है। नदी के प्रांत में पाए जानेवाले गोलाकार एवं चपटे पत्थर के समान प्लीहा दिखाई देती है।

अष्ठीला दीर्घो लोहमयो ग्रन्थिर्लोहकारेषु प्रसिद्धः। चक्रपाणि च.चि. १३/३७

इस सूत्र के अनुसार लोहार के पास पाए जानेवाले ग्रन्थि सदृश्य दीर्घ लोहे के गोलक को 'अष्ठीला' कहा जाता है।

आचार्य शारंगधरजी के अनुसार वाताष्ठीला यह तेरह प्रकार के मूत्राघात में से एक है, जिसका वर्णन शारंगधर टीका दीपिका में निम्नप्रकार से मिलता है।
ततः परं द्वितीयं यत्रानिलः पाषाणग्रन्थिवद्वस्तौ वृत्तमुन्नतं मूत्रविण्मार्गरोधिनं व्याधिं कुर्यात् सोऽष्ठीलाशद्ववाच्यः।

अयं तु वातरोगे पठिताष्ठीलायास्तु बस्तिगतत्वाद्भिन्नः। आढमल्लकृत दीपिका इस सूत्र के अनुसार दूसरा मत यह है की, वात के प्रकोप के कारण बस्ति प्रदेश में स्थित पत्थर के समान मूत्र एवं पुरीष का अवरोध करनेवाली वृत्त एवं उन्नत ग्रंथि को अष्ठीला यह नाम दिया गया है।

माधवनिदानकारोंने भी मूत्राघात के प्रकारों में अष्ठीला का वर्णन किया है। अष्ठीला का वर्णन उन्होंने निम्नलिखित सूत्रव्दारा किया है-

आध्मापयन्बस्तिगुदं रुद्ध्वा वायुश्चलोन्नताम्।
कुर्यात्तीव्रार्तिमष्ठीलां मूत्रविण्मार्गरोधिनीम्।। मा.नि. ३१/४

उपरोक्त वर्णित सूत्र के अनुसार प्रकुपित हुआ वायु बस्ति एवं गुद प्रदेश में आध्मान करता है। साथ ही उनके मार्ग को अवरोध करके बस्ति एवं गुद प्रदेश के मध्य में चल, उन्नत, तीव्र पीडा करनेवाली तथा मलमूत्र के मार्ग में बाधा उत्पन्न करनेवाली अष्ठीला के समान ग्रंथि उत्पन्न कर देता है, उसे अष्ठीला कहा जाता है।

उपरोक्त वर्णित सूत्रों के अनुसार अष्ठीला यह पुरुष मूत्रमार्ग में उत्पन्न होनेवाली तथा मलमूत्र एवं अपानवायु का अवरोध करनेवाली घन एवं कठिन ग्रंथि है। इसलिए इसका वर्णन पौरुष ग्रंथि वृद्धि (Prostate gland enlargement) ऐसा भी किया जाता है। आचार्य सुश्रुतजीने अष्ठीला व्याधि के हेतुओं का वर्णन निम्नलिखित सूत्रव्दारा किया है -

शकृन्मार्गस्य बस्तेश्च वायुरन्तरमाश्रितः।
अष्ठीलावद् घनं ग्रन्थिं करोत्यचलमुन्नतम्।।७।।
विण्मूत्रानिलसङ्गश्च तत्राध्मानं च जायते।
वेदना च परा बस्तौ वाताष्ठीलेति तां विदुः।। सु.उ. ५८/७-८

मलमार्ग एवं बस्ति में स्थित अपानवायु अष्ठीला की तरह घन, चल एवं उन्नत ग्रंथि उत्पन्न कर देता है। इस वजह से मल, मूत्र एवं अधोवायु का अवरोध होने से आध्मान उत्पन्न होता है, जिसके कारण बस्ति में तीव्र वेदना भी होती है। इस व्याधि को वाताष्ठीला कहा जाता है।

साथ ही वाताष्ठीला के बारे में सुश्रुत निदानस्थान १/९० इस सूत्र में निम्नलिखित वर्णन मिलता है-

अष्ठीलावद् घनं ग्रन्थिमूर्ध्वमायतमुन्नतम्।
वाताष्ठीलां विजानीयाद्बहिर्मार्गावरोधिनीम्। सु.नि. १/९०

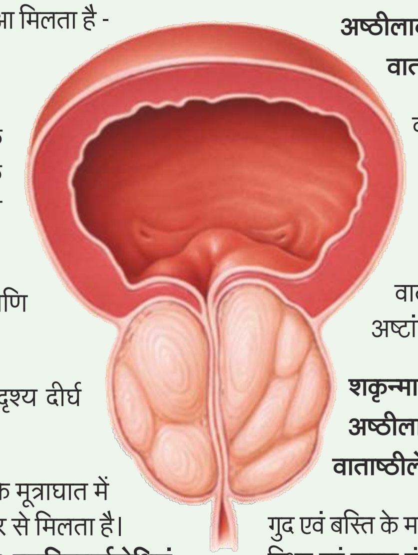

वाताष्ठीला यह अष्ठीला की तरह घन (कठोर) ग्रन्थि है, जो ऊपर की ओर को लम्बी (Enlarge upwards) एवं उन्नत (Bulging) होकर बहिर्मार्गों (External passages) का अवरोध कर देती है।

वाताष्ठीला यह अष्ठीला की तरह परंतु आंतो में घुमती है। साथ ही अष्टांग हृदयकार के अनुसार,

शकृन्मार्गस्य बस्तेश्च वायुरन्तरमाश्रितः।।२३।।
अष्ठीलाभं घनं ग्रन्थिं करोत्यचलमुन्नतम्।
वाताष्ठीलेति साऽध्मानविण्मूत्रानिलसङ्गकृत्।। अ.हृ.नि. ९/२३-२४

गुद एवं बस्ति के मार्ग में वायु आश्रित होने से अष्ठीला (पत्थर) के समान घन (कठिन), स्थिर एवं उन्नत ग्रंथि उत्पन्न होती है, जिसके कारण आध्मान, मल, मूत्र एवं वायु का अवरोध आदि लक्षण उत्पन्न होते हैं। इस ग्रंथि को 'वाताष्ठीला' कहा जाता है।

उसी की तरह प्रत्यष्ठीला के बारे में सुश्रुत निदानस्थान अध्याय १ के ९१ वें सूत्र में वर्णन किया गया है। जिसका वर्णन इस प्रकार से है -

एनामेव रुजायुक्तां वातविण्मूत्ररोधिनीम्।
प्रत्यष्ठीलामिति वदेज्जठरे तिर्यगुत्थिताम्। सु.नि. १/९१

अष्ठीला यह जब उदर में वेदना के साथ तिर्यक् होकर उभरती है, तथा अधोवात, मल एवं मूत्र का अवरोध कर देती है, तो वह 'प्रत्यष्ठीला' कहलाती है।

अष्ठीला यह जिस स्थान अर्थात् Prostate gland का विकार है, उसका वर्णन ग्रंथों में नहीं हैं, ऐसा कहा जाता है। लेकिन उपरोक्त वर्णित सूत्रों के अनुसार यह साबित होता है की, अष्ठीला व्याधि के कारण अधिकतर मूत्रमार्ग संबंधित लक्षण दिखाई देते हैं।

बस्ति, बस्तिशिर, मेढ्र, कटी, वृषण एवं गुद इन अवयवों का आश्रय गुदास्थिविवर (Pelvic inlet) है और यह सभी अवयव परस्पर एक-दूसरे से संबंधित हैं। इसका वर्णन वाग्भटाचार्यजीने अष्टांग हृदय निदानस्थान के ९ वें अध्याय के सूत्र १ में निम्नप्रकार से किया है -

बस्तिबस्तिशिरोमेढ्रकटीवृषणपायवः।
एकसम्बन्धनाः प्रोक्ता गुदास्थिविवराश्रयाः।। अ.हृ.नि. ९/१

साथ ही सुश्रुत निदानस्थान अध्याय ३ सूत्र १९ के अनुसार भी,

बस्तिर्बस्तिशिरश्चैव पौरुषं वृषणौ गुदम्।
एकसम्बन्धिनो ह्येते गुदास्थिविवरस्थिताः।। सु.नि. ३/१९

अर्थात् बस्ति, बस्तिशिर, पौरुष ग्रन्थि, वृषण एवं गुद यह गुदास्थि विवर के आश्रित तथा परस्पर एक दूसरे से संबंधित रहते हैं।

अष्टांग हृदय में बस्ति एवं मूत्राशय का वर्णन निम्नलिखित सूत्रद्वारा किया है -

मूत्राशयो धनुर्वक्रो बस्तिरल्पास्रमांसगः।।
एकाधोवदनो मध्ये कट्याः सद्यो निहन्त्यसून्। अ.हृ.शा. ४/१०-११

चंद्रप्रभा (लोह-शिलाजतुयुक्त)

- मूत्रल कार्य से मूत्राघात में उपयुक्त
- मूत्रकृच्छ्र एवं सदाह मूत्रप्रवृत्ति कम करे
- सरक्त एवं सपूय मूत्रप्रवृत्ति में लाभदायक
- मूत्राश्मरी का भेदन कर उसे बाहर निकालने में मदद करे
- शुक्रधातुविकृति एवं आर्तवसंबंधित विकारों में उपयुत्त

मूत्राशय अर्थात् मूत्र का आशय जहाँ पर मूत्र आकर कुछ देर रुकता है। उसका आकार धनुष के समान घुमावदार होता है। यह रक्त एवं मांस से निर्मित, नीचे की ओर एक मुखवाला, कटि के मध्य भाग में स्थित 'बस्ति' नाम से जाना जाता है।

नाभिपृष्ठकटीमुष्कगुदवङ्क्षणशेफसाम्।
एकद्वारस्तनुत्वक्को मध्ये बस्तिरधोमुखः।। सु.नि.३/१८
अलाब्वा इव रुपेण सिरास्नायुपरिग्रहः। सु.नि.३/२०

इस सूत्र के अनुसार बस्ति नाभि, पृष्ठ, कटी, वृषण, गुदा, वंक्षण एवं लिंग इनके बीच में एक द्वारवाली पतले चर्म से बनी हुई नीचे की ओर मुखवाली होती है। बस्ति स्वरुप में अलाबु के समान होती है। यह सिरा एवं स्नायुओं से घिरी होती है। पुरुषों में बस्ति का आकार उलटे रखे हुए अलाबु (आकृति क्र. १) के समान दिखाई देता है। स्त्रियों में बस्ति का आकार गोलाकर अलाबु (आकृति क्र. २) के समान दिखाई देता है।

आकृति क्र. १

आकृति क्र. २

बस्तिशीर्ष क्या है?

निम्नलिखित सूत्रों के आधारपर बस्तिशीर्ष इस शब्द की निश्चिति करते हैं -

बस्तिशिर का वर्णन आचार्य चरकजीने चरक संहिता शारीरस्थान ७ वें अध्याय के ११ वें सूत्र में निम्नप्रकार से किया है -

एकं बस्तिशीर्षम्। च.शा. ७/११

शरीर में एक बस्तिशीर्ष होता है। इस सूत्र की टीका में आचार्य चक्रपाणिने, **बस्तिशिरो नाभेरधः।** चक्र. च.शा. ७/११ इस सूत्र का वर्णन किया है। जिसका अर्थ है, बस्तिशिर यह नाभि के नीचे का भाग है। साथ ही चक्रपाणिजीने चरक संहिता इंद्रियस्थान १० वें अध्याय के १२ वें सूत्र की टीका में, **बस्तिशीर्षमिति बस्त्यूर्ध्वभागम्।** चक्र. च.इ. १०/१२ इस सूत्रद्वारा बस्तिशीर्ष यह बस्ति का उर्ध्व भाग है, ऐसा वर्णन किया है। बस्तिशिर का प्रमाण, **दशाङ्गुलं बस्तिशिरः।** च. वि. ८/११७ अर्थात् १० अंगुल है। डल्हणाचार्यजी के अनुसार, **बस्तिशिरः मूत्राशय उपरितनो भागः।** ड.सु.नि. ३/५ बस्तिशिर यह मूत्राशय का उपर का भाग है। आचार्य सुश्रुत के अनुसार बस्तिशिर में, **द्वे बस्तिशिरसि** - सु. शा. ५/३८ अर्थात् दो पेशियाँ उपस्थित है।

सुश्रुताचार्यजीने प्रसूति के समय उत्पन्न होनेवाले लक्षणों में भी बस्तिशिर का वर्णन किया है। **सशूलेषु श्रोणिवङ्क्षण बस्तिशिरस्सु च प्रवाहेथाः शनैः शनैः।** सु.शा. १०/९ अर्थात् गर्भनाडी प्रबन्ध छूटने पर श्रोणि, वंक्षण एवं बस्तिशिर में शूल उत्पन्न होने पर आसन्न प्रसवा स्त्री ने धीरे - धीरे प्रवाहण करना चाहिए। मक्कल - **नाभेरधः पार्श्वयोर्बस्तौ बस्तिशिरसि वा ग्रन्थिं करोति।** सु.शा. १०/२४ इन सूत्रों में आचार्य सुश्रुतजीने बस्तिशिर का वर्णन किया है।

इस सूत्र के अनुसार रुक्ष शरीरवाली प्रसूता में मक्कल व्याधि उत्पन्न होने पर वायु नाभि के नीचे पार्श्व, बस्ति अथवा बस्तिशिर में ग्रन्थि उत्पन्न करता है। साथ ही इस अवस्था में नाभि, बस्ति एवं उदर में शूल उत्पन्न होता है। मेहन अर्थात् शिश्न एवं नाभि के मध्य का अंतर १२ अंगुली है। **मेहननाभ्योन्तरं द्वादशाङ्गुलम्।** ड.सु.सू. ३५/१२

कुछ लोग बस्तिशीर्ष को प्रोस्टेट ग्रंथि (Prostate gland) मानते हैं।

उपरोक्त वर्णित सूत्रों के अनुसार बस्तिशीर्ष यह प्रोस्टेट ग्रंथि Prostate gland नहीं है, यह निश्चित होता है।

पौरुष -

पौरुष शब्द का अर्थ शारीरिक बल है। चक्र. च. सू. ११/३ साथ ही आचार्य चक्रपाणिजीने वसा के गुणों का वर्णन करते समय पौरुष शब्द का उल्लेख किया हुआ मिलता है। चरक सूत्रस्थान अध्याय १३ के १७ वें सूत्र की टीका में चक्रपाणिजीने **पौरुषोपचयः शुक्रोपचयः।** चक्र. च.सू. १३/१७ का वर्णन किया है। इस सूत्र के अनुसार वसा का प्रयोग करने से पौरुष उपचय अर्थात् शुक्र की वृध्दि होती है। उत्कृष्ट कर्म को भी 'पौरुष' कहा गया है। चक्र. च.सू. ३०/२४ आचार्य चरकजी के अनुसार वय की मध्यमावस्था उसे कहते हैं, जब शरीर में उचित मात्रा में बल, वीर्य, पौरुष, पराक्रम, ग्रहण, धारण, स्मरण, वचन एवं विज्ञान की शक्ति उत्पन्न हो गई हो तथा सभी धातु गुणों से शरीर युक्त हो एवं शरीर में पूर्ण बल उत्पन्न हो गया हो। साथ ही मानस शक्ति सम्पन्न हो तथा शरीर की धातुएँ भी क्षीण नहीं हो रही हैं। आचार्य चक्रपाणिजीने चरक संहिता चिकित्सास्थान अध्याय २ के दूसरे पाद के ३२ वें सूत्र की टीका में वाजीकरण योगों का महत्व वर्णित करते समय 'पौरुष' शब्द का अर्थ 'शुक्र' माना है। **पौरुषार्थिभिः - शुक्रार्थिभिः।** चक्र. च.चि. २.२/३२ इस सूत्र के अनुसार शुक्राल्पतावाले **पौरुषार्थिभिः** अर्थात् शुक्र वृध्दि की इच्छा रखनेवाले व्यक्ति या रोगियोंने विभिन्न वाजीकर योगों का सेवन करना लाभदायक साबित होता है। आचार्य चक्रपाणिजीने विधिपूर्वक सेवित मद्य के गुणों का वर्णन करते समय भी पौरुष शब्द की चर्चा की है। उनके मतानुसार विधिपूर्वक मद्य का सेवन करने से शरीर में हर्ष (अत्यधिक प्रसन्नता), ऊर्जा, मुद (मानसिक संतोष), पुष्टि एवं आरोग्य के साथ - साथ पौरुष (**पौरुषम् - शुक्रम्।** चक्र. च. चि. २४/६१) अर्थात् शुक्र की वृध्दि होती है। साथ ही आचार्य चरक के अनुसार मैथुन करते समय पुरुष का बीज अर्थात् वीर्य या शुक्र हर्ष के कारण संपूर्ण शरीरावयवों से निकल आता है एवं प्रकट होता है। इसका वर्णन, **बीजं यस्माद् व्यवाये तु हर्षयोनिसमुत्थितम्। शुक्र पौरुषमित्युक्तं तस्माद्वक्ष्यामि तच्छृणु।।** च.चि. ३०/१३३

गोक्षुरादि गुग्गुल

- सदाह एवं सकष्ट मूत्रप्रवृत्ति में लाभदायक
- बारंबार मूत्रप्रवृत्ति की संवेदना कम करे
- अल्पमूत्रनिर्मिति में उपयुक्त
- मूत्राश्मरी एवं सशर्करा मूत्रप्रवृत्ति में भी असरदार
- वातनाशक कार्य से संधिगत वात एवं आमवात की निरामावस्था में उपयुक्त

इस सूत्रद्वारा किया है। इस सूत्र के अनुसार **पौरुषम् - शुक्रम् पुरुषचिन्हम्।** अर्थात् पुरुष का चिन्ह या लक्षण शुक्र के द्वारा ही जाना जाता है।

सुश्रुताचार्यजी के अनुसार पौरुष का अर्थ मेढ्र या वृष्य है। (सु.सू. ४५/२३, सु.सू.५/२९, सु.नि.३/१९) साथ ही वाग्भटाचार्यजी के अनुसार भी पौरुष का अर्थ वीर्य ही है। (अ.हृ.सू.५/१२) वाग्भटाचार्यजीने कषाय रस का अधिक सेवन करने से पौरुषभ्रंश अर्थात् शुक्रधातु का नाश होता है, ऐसा स्पष्ट कहा है। अ.हृ.सू. १०/२१ साथ ही उन्होंने अ.हृ.उ. ३९/४८ में भी पौरुष शब्द का वर्णन किया है। इस स्थानपर 'प्रभ्रष्टपौरुष' का अर्थ 'नष्टशुक्र' प्रतीत होता है।

उपरोक्त सभी सूत्रों में किए वर्णन के अनुसार पौरुष का अर्थ शुक्र, वीर्य, मेढ्र एवं बल प्रतीत होता है। पूर्व जन्म में किए हुए कर्मों को भी पौरुष कहा जाता है, ऐसा चरक संहिता के शारीरस्थान अध्याय ४ में ४४ वे सूत्र में स्पष्ट किया है। सातवीं कला का नाम शुक्रधरा कला है। इसका वर्णन करते समय सुश्रुताचार्यजीने उनकी संहिता के शारीरस्थान ४ (२२ - २३) वे सूत्र में लिखा है।

द्वयङ्गुले दक्षिणे पार्श्वे बस्तिद्वारस्य चाप्यधः।
मूत्रस्रोतः पथाच्छुक्रं पुरुषस्य प्रवर्त्तते।।
कृत्स्नदेहाश्रितं शुक्रं प्रसन्नमनस्तथा।
स्त्रीषु व्यायच्छतश्चापि हर्षात्तत् सम्प्रवर्तते।। सु.शा. ४/२२-२३

अर्थात् बस्तिव्दार के भी नीचे दो अंगुल दक्षिण ओर मूत्रवहन मार्ग से पुरुष का शुक्र निकलता है। प्रसन्न मन होकर स्त्री प्रसंग करनेवाले पुरुष के सर्व शरीर में रहनेवाला शुक्र हर्ष के कारण प्रवृत्त होता है।

इस प्रकार से पौरुष अर्थात् वीर्य (Semen) यह शुक्राणु एवं सेमिनल वेसिकल (Seminal Vesicle) से आनेवाला स्राव रहता है, जिसमें प्रथिन, एंजाइम, फ्रक्टोज, विटामिन सी आदि घटक उपस्थित हैं। साथ ही प्रोस्टेट ग्रन्थि से आनेवाले स्राव तथा म्युकस स्राव (Mucous Secretions) भी उसी में सम्मिलित रहते हैं। इसमें से शुक्राणु की उत्पत्ति दो वृषणों में से होती है। यद्यपि वृषणों की संख्या दो हैं फिर भी सूत्र में 'पौरुष' एकवचनी होने से पौरुष शब्द से वृषण शब्द ग्रहण नहीं करना चाहिए। सेमिनल वेसिकल एवं उससे आनेवाले स्राव शुक्रधरा कला में समाविष्ट होते हैं। इसलिए वीर्य में समाविष्ट होनेवाले स्रावों में से प्रोस्टेट ग्रन्थि से आनेवाले स्रावों से 'पौरुष' शब्द का ग्रहण किया जा सकता है। इस वजह से संख्या में एक, गुदास्थि विवर में एवं बस्तिमूल स्थित ग्रन्थि को Prostate gland माना जा सकता है ।

गणनाथ सेनजी ने पौरुष को Prostate gland माना है। उनके मतानुसार, **पौरुषं तु बस्तिमूलस्थो ग्रन्थि विशेषः प्रत्यक्षदृष्टः स्यादिति प्रतीतिः शारीरविदाम्। न चात्र** अर्थात् पौरुष ग्रन्थि बस्तिमूल के स्थान पर स्थित ग्रन्थि है।

पौरुष ग्रन्थि (Prostate gland) यह वॉलनट (Walnut) के आकार की ग्रन्थि मूत्राशय (Bladder) एवं मेढ्र (Penis) के बीच में स्थित है। प्रोस्टेट का अर्थ है, 'one that stands before/ Protector/ guardian' । इसका वजन साधारणतः ७ से १६ ग्राम होता है। यह मलाशय (Rectum) के आगे स्थित रहती है। मूत्रमार्ग या मूत्रपथ (Urethra) यह पौरुष ग्रन्थि के मध्य से मेढ्र तक जाकर मूत्र को शरीर से बाहर निकालता है।

पौरुष ग्रन्थि का विभाजन निम्नप्रकार से किया गया है -

नाम	ग्रन्थि का भाग	वर्णन
पेरीफेरल जोन (Pz)	७०% तक नवयुवकों में	पौरुष ग्रन्थि के पश्चिम भाग (Posterior aspect) का सब कैप्सूलर भाग जो मूत्रमार्ग के बाहरी हिस्से को आवरण करती है। ग्रन्थि के इसी भाग से ७० - ८०% प्रोस्टेट कैंसर उत्पन्न होते हैं।
सेंट्रल जोन (Cz)	सामान्यतः लगभग २५%	यह क्षेत्र शुक्रसेचक वाहिनी (Ejaculatory duct) को आवरण करता है। इस भाग से २.५% प्रोस्टेट कैंसर उत्पन्न होते हैं, जो अधिक आशुकारी एवं सेमिनल वेसिकल को आच्छादित करते हैं।
ट्रान्झिशन जोन (Tz)	यौवनकाल में ५%	१० - २०% प्रोस्टेट कैंसर इस भाग से उत्पन्न होते हैं। यह भाग मूत्रमार्ग का समीपस्थ

पौरुष ग्रन्थि का विभाजन निम्नप्रकार से किया गया है -

		(Proximal) भाग आच्छादित करता है, तथा पौरुष ग्रन्थि के इसी भाग की वृध्दि जीवनभर होती है। यह भाग पौरुष ग्रन्थि वृध्दि (Benign Prostatic enlargement) के लिए जिम्मेदार होता है।
एंटेरिअर फाइब्रोमस्क्युलर जोन (or Stroma)	लगभग ५%	यह भाग ग्रन्थियों के घटकों से रहित होता है तथा जैसा की नाम दर्शाता है, यह मांसपेशी (Muscle) एवं तंतु ऊतक (Fibrous tissue) से बनता है।

कांचनार गुग्गुल

- मांस - मेद लेखन एवं पाचन कार्य से अष्ठीला में उपयुक्त
- गलगंड एवं संबंधित स्थौल्य कम करे
- गंडमाला, अर्बुद एवं मेदोज ग्रंथि कम करे
- मेदोहर एवं पाचन कार्य से मेदधात्वग्नि विकृतिजन्य स्थौल्य में उपयुक्त

भाग -

पूर्व भाग (Anterior lobe or isthmus)	यह साधारणतया ट्रान्झिशन जोन का भाग होता है। यह मूत्रमार्ग के पूर्व भाग पर तंतु ऊतक पेशियों (Fibro Muscular tissue) का त्रिकोण है। पूर्व भाग का तंतु ऊतक पेशियों का भाग संकुचित होकर वीर्यस्खलन के दरम्यान वीर्य को निष्कासित करता है।
पश्चिम भाग (Posterior lobe)	यह साधारणतया पेरिफेरल भाग का हिस्सा है। यह मध्य एवं पार्श्व भाग के पश्चिम भाग (Posterior) पर ऊतक का पतला स्तर बनाता है।
पार्श्व भाग (Lateral lobes)	यह सभी भागों में विस्तारित हैं। पार्श्व भाग यह सभी भागों में से बडे भाग हैं तथा यह पौरुष ग्रन्थि के मध्य रेखा में मिलते हैं।
मध्य भाग (Median or Middle lobe)	साधारणतया सेंट्रल जोन में विस्तारित होता है। यह भाग पौरुष ग्रन्थि के मध्य रेखा के साथ मूत्रमार्ग के पश्चिम भाग में दिखाई देता हैं। मध्य भाग में पौरुष ग्रन्थि की शुक्रसेचक वाहिनियाँ (Ejaculatory duct) स्थित हैं।

पौरुष ग्रन्थि में मुख्यतः दो भाग होते हैं।

१. बहिःस्रावी (Exocrine glandular tissue - epithelial tissue)

२. तंतुपेशीय (Fibromuscular tissue - smooth muscle tissue and dense irregular connective tissue containing collagen fibers)

१) बहिःस्रावी पेशी से आनेवाले स्राव से वीर्य (Semen) बनता है। पौरुष ग्रन्थि का अधिकतर भाग बहिःस्रावी पेशी से बना रहता है। वीर्य की निर्मिति करना यह पौरुष ग्रन्थि का मुख्य कार्य है।

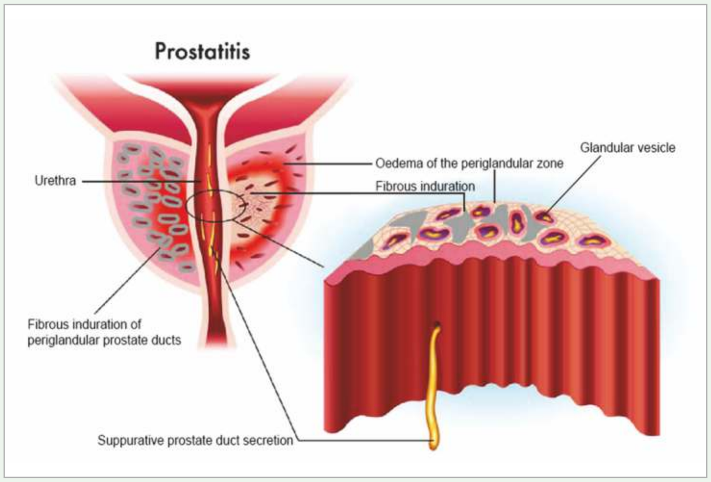

२) तंतुपेशीय (Fibromuscular tissue) भाग में उपस्थित कोलेजन फाइबर से बल प्राप्त होता है। स्मूथ पेशियों (smooth muscles) के कारण उतियों (Tissue) का आकुंचन होकर स्राव बाहर निकलने में मदद् होती है। तंतुपेशीय यह पौरुष ग्रन्थि का सबसे बाहरी एवं मूत्रपथ के आसपास का भाग है।

पौरुष ग्रन्थि स्राव -

पौरुष ग्रन्थि से आनेवाले स्रावों से शुक्र का पोषण तथा रक्षण होता है। वीर्यस्खलन (Ejaculation) के समय पौरुष ग्रन्थि से आनेवाले स्राव मूत्रपथ में आकर शुक्र के साथ वीर्य के रुप में बाहर निकलते हैं। पौरुष ग्रन्थि से आनेवाले स्राव सामान्यतः वीर्य के ३० प्रतिशत होते हैं। यह स्राव दूध के समान सफेद होकर शर्करा (e.g. fructose, glucose), एंजाइम एवं क्षारीय पदार्थों का संयोग रहता है। इसमें से उपस्थित शर्करा स्त्री शरीर में प्रवेश कर स्त्री बीज को फलित करनेवाले शुक्राणुओं का पोषण करती है। वीर्यस्खलन के पश्चात् शुक्र में से प्रथिनों को तोडकर गाढे (Viscous) शुक्र में से शुक्राणुओं को मुक्त करने में एंजाईम सहायक होते हैं। इस स्राव में से क्षारीय घटक योनि के अम्लीय स्रावों को प्रभावहीन कर शुक्राणुओं को स्त्री शरीर में सुरक्षित एवं जीवित रहने में मदद् करते हैं।

प्रोस्टेट परीक्षण -

१. **अंगुली से गुद परीक्षण** (Digital Rectal Examination - DRE) - चिकित्सक ग्लोव्हस् पहनकर अंगुली पर जेल् लेकर गुद मार्ग व्दारा पौरुष ग्रन्थि का परीक्षण कर सकते हैं। अंगुली व्दारा गुद परीक्षण करने से पौरुष ग्रन्थि वृद्धि, प्रोस्टेट कैंसर की ग्रन्थि एवं पौरुष ग्रन्थि शोथ (Prostatitis) से उत्पन्न स्पर्शासहत्व (Tenderness) का निदान किया जा सकता है।

२. **प्रोस्टेट विशेष अँटीजन** (Prostate specific antigen - PSA) - पौरुष ग्रन्थि प्रोस्टेट विशेष अँटीजन (PSA) इस प्रथिन का निर्माण करती है, जिसकी जाँच रक्त परीक्षण के व्दारा की जा सकती है। PSA की रक्त में बढी मात्रा से प्रोस्टेट कैंसर का निदान किया जा सकता है, परंतु कभी कभी पौरुष ग्रन्थि वृद्धि, कैंसर के कारण से न होते हुओ भी PSA की मात्रा बढ सकती है।

३. **प्रोस्टेट अल्ट्रासाउंड (Transrectal ultrasound) -** अल्ट्रासाउंड प्रोब गुद में प्रवेशित कर प्रोस्टेट के समीप लाकर परीक्षण किया जाता है। सामान्यतः अल्ट्रासाउंड के साथ बायोप्सी कर प्रोस्टेट कैंसर है या नहीं इसका भी निदान किया जाता है।

४. प्रोस्टेट बायोप्सी - प्रोस्टेट कैंसर का निदान करने के लिए सुई प्रोस्टेट ग्रन्थि में डालकर ऊतक (Tissue) बाहर निकाला जाता है। सामान्यतः यह गुदमार्ग व्दारा किया जाता है।

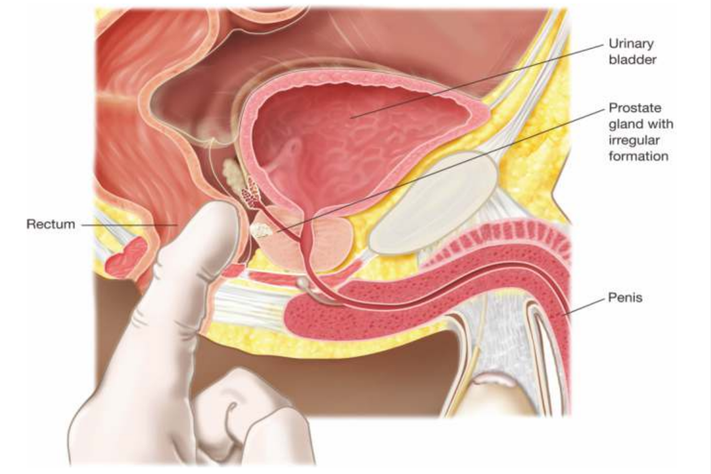

प्रोस्टेट के विकार –

१.अष्ठीला यह पौरुष ग्रन्थि की व्याधि है। सुश्रुत निदानस्थान अध्याय ३/२७ में किए वर्णन के अनुसार,

मारुते प्रगुणे बस्तौ मूत्रं सम्यक् प्रवर्तते।
विकारा विविधाश्चापि प्रतिलोमे भवन्ति हि।।
मूत्राघाताः प्रमेहाश्च शुक्रदोषास्तथैव च।
मूत्रदोषाश्च ये केचित् बस्तावेव भवन्ति हि। सु.नि. ३/२७-२८

अर्थात् वात के प्रकृतिस्थ होने से बस्ति में मूत्र ठीक तरह से प्रवर्तित होता है। लेकिन वात के विरुद्ध (प्रतिलोम) होने पर अनेक प्रकार के विकार उत्पन्न होते हैं। मूत्राघात, प्रमेह, शुक्रदोष तथा अनेक प्रकार के मूत्रदोष बस्ति में ही उत्पन्न होते हैं।

रुक्ष अन्नसेवन, वेगविधारण, वेगउदीरण, अत्यधिक यात्रा, चंक्रमण एवं रात्रि जागरण आदि जैसे कारणों से अपान वायु की विकृति होती है। अष्ठीला व्याधि में प्रकुपित हुआ वायु बस्ति एवं गुदप्रदेश के मध्य में चल, उन्नत, तीव्र पीडा करनेवाली एवं मलमूत्र के मार्ग को रोकनेवाली अष्ठीला के समान ग्रन्थि उत्पन्न कर देता है।

हीरक भस्म

- कैंसर की चिकित्सा में उपयुक्त
- वाजीकर गुणधर्म के कारण नपुंसकता एवं वंध्यत्व में लाभदायक
- सप्तधातुपोषक होने से राजयक्ष्मा में लाभकर
- हृदय एवं संबंधित रक्तवाहिनियों में रक्तसंवहन सुयोग्य करे
- शारीरिक एवं मानसिक बल बढाए

पौरुष ग्रन्थि की वृद्धि (Benign prostatic hyperplasia) में प्रोस्टेट के स्ट्रोमल (Stromal) एवं एपिथेलिअल (Epithelial) पेशियों में हाइपरप्लासिया (Hyperplasia) दिखाई देता है। यह कैंसर की ग्रन्थि न होकर केवल प्रोस्टेट ग्रन्थि का आकार बढता है। हाइपरप्लासिया (An increase in the number of cells) होने के कारण पेशियों की संख्या बढती है। ग्रन्थि का आकार अधिक बढने पर मूत्रमार्ग पर दबाव आने लगता है, जिसके कारण मूत्राशय से मूत्र निकलने में अवरोध उत्पन्न होता है। मूत्र निकलने में उत्पन्न अवरोध के कारण मूत्राशय को मूत्र निष्कासन के लिए अधिक कार्य करना पडता है, जिसके कारण मूत्राशय के पेशियों में अतिवृद्धि, अस्थिरता एवं दुर्बलता आदि लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं। पौरुष ग्रन्थि वृद्धि से असम्यक् मूत्रप्रवृत्ति, बारंबार मूत्रप्रवृत्ति, मूत्रप्रवृत्ति पश्चात् बूँद-बूँद मूत्रप्रवृत्ति होना, सरक्त मूत्रप्रवृत्ति, सपूय मूत्रप्रवृत्ति एवं मूत्रप्रवृत्ति समय वेदना आदि लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं। साथ ही अनियंत्रित मूत्रप्रवृत्ति (Urinary incontinence), मूत्र संदेह (Urinary hesitancy), मूत्रप्रवृत्ति अत्यावशकता (Urgency), कम मूत्रधारा (Weak urinary stream) एवं मूत्रप्रवृत्ति में कठिनाई (Straining to void) आदि लक्षण भी दिखाई दे सकते हैं।

आधुनिक शास्त्र के कई विशेषज्ञों के मतानुसार एण्ड्रोजन (टेस्टोस्टेरोन एवं संबंधित हार्मोन्स) भी पौरुष ग्रन्थि वृद्धि के लिए कारण होते हैं।

२. पौरुष ग्रंथि शोथ (Prostatitis) -
पौरुष ग्रंथि शोथ (Prostatitis) यह पौरुष ग्रंथि में उत्पन्न शोथ या सूजन/क्षोभ है। यह सभी उम्र के पुरुषों में उत्पन्न हो सकता है। यह तीन प्रकार का होता हैं -

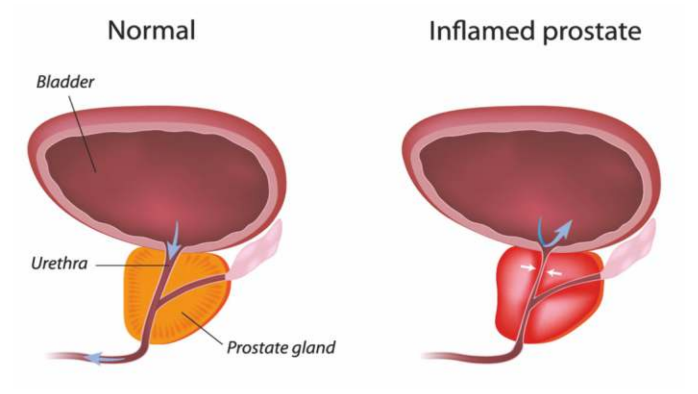

I. तीव्र जंतुसंसर्ग से उत्पन्न पौरुष ग्रंथि शोथ - यह आकस्मिक जंतुसंसर्ग के कारण उत्पन्न पौरुष ग्रंथि शोथ है। इसके कारण बारंबार मूत्रप्रवृत्ति, मूत्रप्रवृत्ति अत्यावश्यकता, रात्रि के समय बारंबार मूत्रप्रवृत्ति तथा बस्ति प्रदेश एवं जननेन्द्रियों में शूल आदि लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं। साथ ही ज्वर, हृल्लास, छर्दि एवं मूत्रदाह जैसे लक्षण भी दिखाई दे सकते हैं। पौरुष ग्रंथि में तीव्र जंतुसंसर्ग अधिक समय रहने पर बस्ति में जंतुसंसर्ग, पौरुष ग्रंथि में विद्रधि एवं मूत्राघात जैसे लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं। चिकित्सा न किए जाने के कारण भ्रम एवं कम रक्तदाब जैसे लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं।

II. जीर्ण जंतुसंसर्ग से उत्पन्न पौरुष ग्रंथि शोथ - बारंबार मूत्रसंसर्ग के कारण यह अवस्था उत्पन्न होती है। इस व्याधि में तीव्र जंतुसंसर्ग से उत्पन्न पौरुष ग्रंथि शोथ के कारण उत्पन्न लक्षणों के समान ही लक्षण दिखाई दे सकते हैं।

III. क्रोनिक नॉन बैक्टीरियल प्रोस्टेटाइटिस -
सामान्यतः अधिकतर लोगों में लगभग ९०% लोगों में यह अवस्था दिखाई देती है। इस अवस्था के कारण बस्तिप्रदेश एवं जननेंद्रिय में वेदना उत्पन्न हो सकती है। रुग्णों में मूत्र परीक्षण में जंतुसंसर्ग दिखाई नहीं देता, परंतु अन्य शोथ (Inflammation) के लक्षण दिखाई दे सकते हैं।

पौरुष ग्रंथि शोथ यह विविध अवस्थाएँ एवं चिकित्सा प्रक्रियाओं के कारण उत्पन्न हो सकता है। इनमें से कुछ इस प्रकार से हैं-

i) सामान्यतः मूत्रशलाका (Urinary Catheter) का प्रयोग किसी चिकित्सा प्रक्रिया के दरम्यान किया हो।

ii) अप्राकृत् मूत्रमार्ग (Abnormal Urinary tract)

iii) नूतन मूत्राशय संसर्ग

iv) पौरुष ग्रंथि वृद्धि

v) ऑटो इम्युन डिसिज

(An abnormal reaction of the body to the prostate tissue)

पौरुष ग्रंथि शोथ का निदान सामान्यतः अंगुली से गुद परीक्षण (Digital rectal examination), प्रोस्टेट फ्लुइड ॲनालिसिस, ट्रान्सरेक्टल अल्ट्रासाउंड एवं बायोप्सी के व्दारा किया जा सकता है।

३.पौरुष ग्रंथि कर्करोग (Prostate Cancer)-
पौरुष ग्रंथि वृद्धि होने पर कठिन, स्थिर एवं उन्नत ग्रंथि उत्पन्न होती है, जिसके कारण आध्मान, मल, मूत्र एवं वायु का अवरोध आदि लक्षण उत्पन्न होते हैं। इसे पौरुष ग्रंथि का कर्करोग कहा जाता है। - अ. हृ. नि. ९/२३-२४

पौरुष ग्रंथि कर्करोग मंदगति से बढनेवाला व्याधि है। शुरुआत की अवस्था में पौरुष ग्रंथि कर्करोग के कारण कोई भी लक्षण उत्पन्न नहीं होते हैं। पौरुष ग्रंथि कर्करोग उत्पन्न करनेवाले कारणों में प्रमुख कारण हैं -

i) उम्र - बढती उम्र के साथ पौरुष ग्रंथि कर्करोग की संभावना बढती है।

ii) आनुवंशिकता - आनुवंशिकता के कारण पौरुष ग्रंथि कर्करोग उत्पन्न हो सकता है।

iii) आहार - रुक्ष, लघु, अतिउष्ण, अतितीक्ष्ण एवं अतिशीत जैसे वातप्रकोपक आहार का अत्यधिक प्रमाण में सेवन करने से पौरुष ग्रंथि कर्करोग की संभावना बढ जाती है।

चंदनासव

- शीत एवं पित्तशामक होने से मूत्रमार्ग दाह एवं सदाह मूत्रप्रवृत्ति में उपयुक्त
- मूत्राघात में मूत्रल कार्य से प्रभावी
- उशीर एवं चंदन के कारण स्तंभन गुण से रक्तपित्त, रक्तप्रदर एवं श्वेतप्रदर में उपयुक्त
- सर्वांगदाह, अम्लपित्त एवं शीतपित्त में गुणकारी

iv) विहार - अत्यधिक चंक्रमण, अत्यधिक मात्रा में यात्रा करना, शीत वायु सेवन एवं शीत वातावरण में रहना आदि कारणों से वात प्रकोप होकर पौरुष ग्रंथि कर्करोग की संभावना बढ जाती है।

'पौरुष ग्रंथि कर्करोग' के कारण दिन तथा रात्रि के समय बारंबार मूत्रप्रवृत्ति, मूत्रकृच्छ्रता, सरक्त मूत्रप्रवृत्ति, सशूल मूत्रप्रवृत्ति एवं सशूल वीर्यस्खलन जैसे लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं। साथ ही अस्थिशूल (विशेषतः कशेरुका, श्रोण्यस्थि एवं पर्शुकास्थि), ऊर्वस्थि के समीप के भाग में (Proximal part of femur) वेदना, पैरों में दुर्बलता तथा अनियंत्रित मूत्र (Urinary incontinence) एवं मलप्रवृत्ति (Fecal incontinence) जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं। विशेषतः जब यह लक्षण कर्करोग अधिक प्रमाण में बढकर मेरुदण्ड (Spinal cord) एवं रीढ की हड्डी (Spine) को आच्छादित करता है, तब दिखाई देता है।

प्रायः पौरुष ग्रंथि कर्करोग का निदान बायोप्सी से किया जा सकता है। अंगुली व्दारा गुद परीक्षण (Digital rectal examination) कर पौरुष ग्रंथि संबंधित विकृतियों का परीक्षण किया जा सकता है। अल्ट्रासाउंड एवं एम्आर्आय् (Magnetic resonance imaging) के व्दारा भी पौरुष ग्रंथि कर्करोग का निदान किया जा सकता है। ट्युमर मार्कर परीक्षण व्दारा PSA (Prostate specific antigen) एवं अन्य ट्युमर मार्कर की उपस्थिति से भी पौरुष ग्रंथि कर्करोग का निदान किया जाता है।

४. पौरुष ग्रंथि क्षय (Tuberculosis of the Prostate) -
पौरुष ग्रंथि राजयक्ष्मा काफी कम प्रमाण में दिखाई देता है, लेकिन उसमें पौरुष ग्रंथि क्षय के कारण मूत्रकृच्छ्रता, मूत्रदाह, सशूल मूत्रप्रवृत्ति एवं सरक्त मूत्रप्रवृत्ति जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं।

५. प्रोस्टेट - रेक्टल फिस्ट्युला -
प्रोस्टेट में किसी भी प्रकार की शस्त्रक्रिया करते समय गलती से प्रोस्टेट - रेक्टल फिस्ट्युला उत्पन्न हो सकते हैं। इसके कारण मूत्रमार्ग में जीर्ण जंतुसंसर्ग, मूत्र के साथ अन्न या मल बाहर निकलना, अतिद्रव मलप्रवृत्ति, गुदमार्ग से मूत्रप्रवृत्ति तथा बस्तिप्रदेश एवं गुदप्रदेश में वेदना आदि लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं।

चिकित्सा -

१. अष्ठीला व्याधि की चिकित्सा का वर्णन सुश्रुत संहिता में निम्न सूत्र द्वारा किया है -

अष्ठीलाप्रत्यष्ठीलयोर्गुल्माभ्यन्तरविद्रधिवत् - सु. चि. ५/२७

इस सूत्र के अनुसार अष्ठीला एवं प्रत्यष्ठीला की चिकित्सा विद्रधि के समान करनी चाहिए।

अपक्व अन्तर्विद्रधि में ऊषकादि गण के प्रक्षेप के साथ वरुणादि गण क्वाथ का प्रयोग करना चाहिए। वरुणादि एवं ऊषकादि गण के द्रव्य और विरेचक द्रव्यों से सिद्ध घृत, प्रतिदिन प्रातःकाल सेवन करना चाहिए। विद्रधि की चिकित्सा करते समय वरुणादि, ऊषकादि एवं विरेचक गण के क्वाथ में तैल मिलाकर आस्थापन तथा अनुवासन बस्ति का प्रयोग करना चाहिए। साथ ही दोषानुसार पान, आलेप और भोजन में मीठे सहजन के वृक्ष की छाल का चूर्ण मिलाकर सेवन करना चाहिए। (सु.चि. १६/२८-३१)

२. आचार्य चरकजी के अनुसार,

बस्तिमुत्तरबस्तिं च सर्वेषामेव दापयेत्। च.सि. ९/४९

सभी प्रकार के बस्ति संबंधित विकारों में बस्ति या उत्तरबस्तियों का प्रयोग करना

चाहिए। साथ ही मूत्रकृच्छ्रहर औषधियों का प्रयोग भी किया जा सकता है।

३. आचार्य सुश्रुतजीने सूत्रस्थान ४६/२२० में वर्णन करते हुअे कहा है -

सक्षारं मधुरं चैव शीर्णवृन्त कफापहम्।
भेदनं दीपनं हृद्यमानाहाष्ठीलानुल्लघु।। सु.सू. ४६/२२०

शीर्णवृन्त क्षारयुक्त, मधुर, कफनाशक, भेदन, अग्निदीपक, हृद्य है। साथ ही आनाह एवं अष्ठीला का नाश करता है। इस सूत्र की टीका में आचार्य डल्हणजीने निम्नलिखित सूत्र का वर्णन किया है,

अष्ठीला मूत्राष्ठीला न, पुनरनिलाष्ठीला,
शीर्णवृन्तस्य मूत्रविकारहारित्वादवस्थात्रयेऽपि;
आनाहश्चाष्ठीला चानाहाष्ठीलं, तन्नुदतीति।। डल्हण सु.सू.४६/२२०

अर्थात् शीर्णवृन्त का प्रयोग अष्ठीला, मूत्राष्ठीला, वाताष्ठीला इन विकारों में आनाह यह लक्षण दिखने पर किया जा सकता है।

पुनर्नवासव

- मूत्रजनन कार्य कर मूत्रोत्पत्ति योग्य प्रकार से करे
- मूत्राघात एवं मूत्रकृच्छ्र में मूत्रल कार्य से प्रभावी
- यकृत्, प्लीहा एवं हृदय पर विशेष कार्यकारी
- शोथघ्न कार्य से वृक्क विकृतिजन्य, हृदय विकृतिजन्य एवं यकृत् - प्लीहा विकृतिजन्य शोथ में उपयुक्त

४. पौरुष ग्रंथि वृद्धि से असम्यक् मूत्रप्रवृत्ति, बारंबार मूत्रप्रवृत्ति, मूत्रप्रवृत्ति पश्चात् बूँद - बूँद मूत्रप्रवृत्ति होना, सरक्त मूत्रप्रवृत्ति, सपूय मूत्रप्रवृत्ति एवं मूत्रप्रवृत्ति समय वेदना आदि लक्षण होनेपर चंद्रप्रभा (लोह - शिलाजतुयुक्त) का प्रयोग किया जा सकता है। सपूय मूत्रप्रवृत्ति में चंद्रप्रभा (लोह - शिलाजतुयुक्त) के साथ सुवर्णराजवंगेश्वर (स्वर्णवंग) का प्रयोग भी किया जा सकता है।

५. पौरुष ग्रंथि वृद्धि के कारण उत्पन्न मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात एवं सदाह मूत्रप्रवृत्ति में गोक्षुरादि गुग्गुल का प्रयोग किया जा सकता है। सदाह मूत्रप्रवृत्ति में गोक्षुरादि गुग्गुल के साथ शीतसुधा, उशीरासव या चंदनासव का प्रयोग भी किया जा सकता है।

६. पौरुष ग्रंथि वृद्धि में कांचनार गुग्गुल का प्रयोग भी उपयुक्त साबित होता है।

७. पौरुष ग्रंथि अधिक प्रमाण में बढने पर तथा मूत्रप्रवृत्ति बिल्कुल भी न होने पर पौरुष ग्रंथि का शस्त्रकर्म किया जा सकता है।

८. सान्निपातिक अष्ठीला, अष्ठीलावत् घन, विण्मूत्रवातसंग अर्थात् मल, मूत्र एवं वात प्रवृत्ति न होना, एक साल से भी पुरानी तथा औपसर्गिक हेतुजन्य अष्ठीला असाध्य होती है।

९. वृद्धावस्था में शुक्र का रेचन न होने से भी पौरुष ग्रंथि वृद्धि उत्पन्न हो सकती है। इस अवस्था में बृहती फल का प्रयोग १ ग्राम दिन में ३ बार दूध या कोष्ण जल के साथ किया जा सकता है।

१०. पौरुष ग्रंथि शोथ में सशूल मूत्रप्रवृत्ति, सदाह मूत्रप्रवृत्ति, बारंबार मूत्रप्रवृत्ति, कटिशूल, ज्वर एवं शीतपूर्वक ज्वर आदि लक्षण रहने पर सूक्ष्म त्रिफला, त्रिफला गुग्गुल, पुनर्नवादि गुग्गुल, वंग भस्म एवं शुद्ध शिलाजित का प्रयोग लाभदायक साबित होता है।

११. प्रोस्टेट - रेक्टल फिस्टयुला में जीर्ण जंतुसंसर्ग, गुदप्रदेश एवं बस्तिप्रदेश में वेदना आदि जैसे लक्षण रहने पर रससिंदूर, सूक्ष्म त्रिफला एवं कैशोर गुग्गुल का प्रयोग उपयुक्त साबित होता है।

१२. पौरुष ग्रंथि वृद्धि या शोथ में पौरुष ग्रंथि मर्दन द्वारा भी चिकित्सा की जा सकती है। पौरुष ग्रंथि मर्दन से पौरुष ग्रंथि में संचित द्रव पदार्थ बाहर निकलते हैं।

क्या यह सोचना जरुरी नहीं?

आधुनिक सुविधाओं के आधार पर आयुर्मर्यादा दिन प्रति दिन बढती जा रही है, जो आज भारत में ६६.८ वर्ष है। फेरी के क्लिनिकल ॲडव्हायजर २०१६ ई-बुक के अनुसार लगभग ५०% पुरुष अपने जीवनकाल में प्रोस्टेटाइटिस के कारण व्याधिग्रस्त होते हैं। IHD एवं मधुमेह की तुलना में प्रोस्टेटाइटिस का प्रमाण अधिक हैं।

पौरुष ग्रंथि वृद्धि (BPH) यह वृद्धावस्था से संबंधित अन्य बढती समस्या है। बढता आयुर्मान यह पौरुष ग्रंथि वृद्धि (BPH) का एक कारण है। बढती उम्र के साथ पौरुष ग्रंथि वृद्धि (BPH) की संभावना भी बढती है। हिस्टोलॉजिकल परीक्षण के अनुसार उम्र के ९ वें दशक में इसकी संभावना अधिक अर्थात् ८०% है।

ज्येष्ठ नागरिकों का जीवन अधिक सुखकर बनाना क्या हमारे लिए आवश्यक नहीं है?

आधुनिक शास्त्र के अनुसार पौरुष ग्रंथि वृद्धि (BPH) कैंसर में परिवर्तित होने की संभावना बहुत अधिक है। वैद्य होने के नाते इस व्याधि को रोकना क्या हमारा कर्तव्य नहीं है?

आज - कल लोग बिना सोचे समझे वीर्यस्खलन समय बढाने के लिए औषधियों का प्रयोग कर रहे हैं, जिनकी सुरक्षितता के बारे में कोई ठोस जानकारी नहीं हैं। यह औषधियाँ आज-कल कार्सिनोमा या तत्सम प्रकार की प्रोस्टेट की अन्य व्याधियाँ होने की तथा जिनकी चिकित्सा करना अत्यंत कठिन है, उनकी संभावना अधिक बढा रही हैं और आतंक फैला रही हैं।

लोग अपनी कामेच्छा बरकरार रखने के लिए भी औषधियों का प्रयोग कर रहे हैं। क्या यह सही है? क्या यह हमारा कर्तव्य नहीं है कि, उन्हें शरीर पर इन औषधियों के हानिकारक दुष्परिणामों से सतर्क करें?

आयुर्वेद हमेशा आहार, विहार के साथ हर स्थिति में मन को स्थिर रखने की सलाह देता है। क्या बदलती जीवनशैली के बारे में सोचना एवं उसके अनुसार कार्य करना आवश्यक नहीं है?

क्या आज के काल में भारत में सर्वेक्षण कर ठोस प्रयासों से प्राप्त जानकारी के आधार पर स्थायी उपाय खोजने का प्रयास नहीं करना चाहिए? क्या इन शरीर को क्षति पहुंचानेवाले घटकों के बारे में हम वैद्योंने अपने रुग्णों को सचेत करना आवश्यक नहीं है? क्या हमें इस बारे में सोचना जरुरी नहीं?

धूतपापेश्वर
१८७२ से आयुर्वेद सेवा

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :
स्वास्थ्य सेवा विभाग
श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड
१३५, नानुभाई देसाई रोड, खेतवाडी, मुंबई- ४०० ००४.
फोन : ९१-२२-३००३ ६३०० फॅक्स :९१-२२-२३८८ १३०८
ई-मेल : healthcare@sdlindia.com
वेब साईट : www.sdlindia.com

केवल पंजीकृत चिकित्सक, अस्पताल या प्रयोगशालाओं के लिये
© All Copy Rights Reserved